

डॉ. एंथोनी जे. टोमासिनो, यीशु से पहले यहूदी धर्म, सत्र 7, द हस्मोनियन विद्रोह

© 2024 टोनी टोमासिनो और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. एंथोनी टोमासिनो द्वारा यीशु से पहले यहूदी धर्म पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 7 है, हस्मोनियन विद्रोह।

तो, हम हस्मोनियन विद्रोह के समय पर आ रहे हैं।

तो, चलिए यहाँ थोड़ी पृष्ठभूमि देखते हैं और देखते हैं कि यह कैसे अस्तित्व में आया। राजनीतिक सेटिंग, हम पहले ही कुछ हद तक बात कर चुके हैं। सेल्यूसिड्स ने 200 के आसपास, 204-200 ईसा पूर्व के बीच, मिस्र से फिलिस्तीन पर कब्ज़ा करने में कामयाबी हासिल की। उस अवधि में।

फिलिस्तीनी यहूदी इस घटनाक्रम से संभवतः शुरू में प्रसन्न थे। उन्होंने पहले टॉलेमीज़ के खिलाफ़ विद्रोह करने की कोशिश की थी क्योंकि उन्हें लगा था कि उन्हें सस्ते कर मिलेंगे। खैर, अब उन्हें यह पता चलने वाला है कि घास हमेशा दूसरी तरफ़ से हरी नहीं होती पहाड़ी की ओर।

देखिए, जो हुआ था वह यह था कि, हाँ, सेल्यूसिड्स ने, अधिकांश भाग के लिए, अपने शासन वाले लोगों के साथ करों के मामले में काफी नरमी बरती थी। लेकिन फिर उन्हें बहुत जल्दी नकदी की ज़रूरत महसूस हुई। इसका कारण यह था कि सेल्यूसिड्स ने रोमनों के खिलाफ़ लड़ाई में यूनानियों की सहायता करने का फैसला किया था।

खैर, रोमन जीत गए। और सेल्यूसिड्स में से एक को बंदी बना लिया गया। और वास्तव में, एंटीओकस तृतीय के बेटे को रोम में बंदी बनाकर रखा गया था।

और फिर सेल्यूसिड्स को उसे फिरौती के तौर पर वापस देना पड़ा। खैर, रोमन ऐसे लोग नहीं थे जो जीत में कृपालु थे। और सेल्यूसिड्स को रोमनों को जो धनराशि देनी पड़ी, वह वास्तव में उनकी अर्थव्यवस्था को पंगु बना रही थी।

बेशक, अपने बिलों का भुगतान करने के लिए उन्हें लोगों पर कर लगाना पड़ता था। सेल्यूसिड्स के शासन में, यहूदियों को लगा कि टॉलेमी के शासन में उनकी स्थिति खराब थी। सेल्यूसिड्स के शासन में, कर आसमान छू रहे थे।

और इसलिए, वे इस विकास से विशेष रूप से खुश नहीं थे। अब, उत्पीड़न से पहले, यह तथ्य कि यहूदियों पर इस तरह से कर लगाया जा रहा था, हेलेनाइजिंग पार्टी की ओर से यरूशलेम को पोलिस में बदलने के लिए बढ़ती हुई आवाज़ों को जन्म दिया। क्योंकि पोलिस के रूप में, उन्हें कर से छूट दी जाएगी।

तो, हमारे पास हेलेनिस्टिक सुधार की शुरुआत है। मैकाबीज़ की किताब में कुछ इस तरह लिखा है कि उन दिनों, यहूदियों के कुछ दुष्ट, निकम्मे लोगों ने कहा, चलो हम फिर से राष्ट्रों में शामिल हो

जाएँ क्योंकि जब से हम उनसे अलग हुए हैं, हमारे साथ सिर्फ़ बुराई ही हुई है। उन्होंने तय किया कि वे यूनानी बनने की कोशिश करेंगे।

हमें बताया गया कि वे इस हद तक जा रहे थे कि कई प्रमुख लोग अपना खतना रद्द करने की कोशिश कर रहे थे। और अगर आपको लगता है कि यह प्रतीकात्मक है, तो ऐसा नहीं था। यह शाब्दिक था।

उनके पास वास्तव में ऐसी प्रक्रियाएं थीं जिनका उपयोग वे अपने खतने के निशानों को हटाने के लिए कर सकते थे। ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके बारे में मैं विस्तार से बताना चाहूँ या व्यक्तिगत रूप से अनुभव करना चाहूँ। तो वैसे भी, जेसन, जो महायाजक ओनियास द्वितीय का भाई है, उसे महायाजक नियुक्त करने के लिए एंटीओकस को रिश्वत देता है।

यह 170 ईसा पूर्व की घटना है। खैर, आप जानते हैं, एंटीओकस को पैसे की ज़रूरत है। इसलिए, एंटीओकस रिश्वत लेने में बहुत खुश है।

उसके लिए, एक महायाजक दूसरे महायाजक जितना ही अच्छा है। आखिरकार, वे दोनों एक ही परिवार से हैं, हारून के वंशज हैं, आदि।

तो क्यों नहीं? खैर, जेसन यरूशलेम को पुलिस में बदलने की इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाना चाहता है, और आप उसकी दलीलें लगभग सुन सकते हैं। वे किसी राजनेता या कॉलेज के अध्यक्ष या कुछ और की तरह लगते हैं। आप जानते हैं, हमें पैसे की ज़रूरत है।

यह हमारे लिए एक बहुत छोटा बलिदान है, ताकि हम उस तरह की आज़ादी हासिल कर सकें जो हमें एक शहर के रूप में मिलेगी। इसलिए, इस समय जेसन के अधीन सुधार की शुरुआत होती है। लेकिन जो होता है वह यह है कि जेसन को एक और भी ज़्यादा कट्टरपंथी यहूदी, मेनेलॉस नामक व्यक्ति द्वारा पीछे छोड़ दिया जाता है।

मेनेलॉस हारून के गोत्र का सदस्य नहीं है। मेनेलॉस वास्तव में पुजारी भी नहीं है। वह किसी भी तरह से पुजारी है। और फिर भी, अब उसे हटा दिया गया है, और उसने अब पुजारी वर्ग को अपने राजनीतिक मोहरे में बदलने के लिए वैध पुजारी वंश को हटा दिया है।

इसलिए, अब मेनेलॉस यहूदियों का नेतृत्व उनके महायाजक के रूप में कर रहा है और मेनेलॉस पूरी तरह से एंटीओकस का ऋणी है, एंटीओकस सोचता है कि इसका मतलब है कि यरूशलेम सुरक्षित होने जा रहा है और अब उसे यहूदिया से किसी भी तरह के विद्रोह के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मेनेलॉस ने मंदिर के सभी खजानों को लूटने का फैसला करके महायाजक के रूप में अपना शासन शुरू किया। हम अगले व्याख्यान में मंदिर के बारे में थोड़ा और बात करेंगे।

लेकिन यहाँ जो कुछ हो रहा है, वह यह है कि मंदिर लंबे समय से धन के भंडार के रूप में काम करता था, और यरूशलेम के कई सबसे धनी यहूदी नागरिकों ने मंदिर में अपना धन जमा किया

था। खैर, मेनेलॉस उन पैसों से खुद की मदद करने जा रहा था, और यह यहूदियों को खुश नहीं कर रहा था।

लेकिन जब तक एंटीओकस को उसका हिस्सा मिल रहा था, वह हस्तक्षेप नहीं करने वाला था। तो, यहाँ वास्तविक विद्रोह को कौन भड़काता है? खैर, एंटीओकस, यह सोचकर कि यरूशलेम सुरक्षित है, मिस्र पर आक्रमण करने का फैसला करता है। अब, एक आठ वर्षीय बच्चे ने सिंहासन ले लिया है।

और इसलिए, यह मिस्र की भूमि पर कब्ज़ा करने के लिए आदर्श समय लगता है। एंटीओकस अपनी सेनाओं के साथ मिस्र की यात्रा करता है, सीमा पार करता है, और देखता है कि उसे वहाँ कौन मिलता है, सिवाय एक रोमन जनरल और रोमन सैनिकों के एक समूह के। अब, एंटीओकस, यह एंटीओकस IV है, उसे रोमन सैनिकों के बारे में कुछ पता था।

वह अपने पिता द्वारा छुड़ाए जाने से पहले रोम में बंदी था। इसलिए, वह समझ गया था कि रोम के खिलाफ जाने का क्या मतलब है। उसने देखा था कि उन्होंने यूनानियों के साथ क्या किया था।

और वह रोम के साथ संघर्ष में नहीं पड़ना चाहता था। लेकिन उसने फैसला किया कि ऐसा होगा, उसे इस सब में अपना चेहरा बचाने की जरूरत थी। इसलिए, उसने रोमन जनरल से कहा, ठीक है, हम मिस्र से वापस जाने के आपके अनुरोध पर विचार करेंगे।

और रोमन जनरल, मेरे दिमाग में इस तरह की एक अद्भुत छवि है जो लगभग कार्टून जैसी है। आप जानते हैं, यह एंटीओकस एपिफेन्स, जैसा कि हम समझते हैं, वास्तव में एक बड़ा आदमी है, बहुत प्रभावशाली। और मैं बस कल्पना कर सकता हूँ कि यह छोटा रोमन जनरल अपनी तलवार निकालता है और एंटीओकस एपिफेन्स के पास जाता है।

और वह एंटीओकस एपिफेन्स के चारों ओर रेत में एक घेरा बनाता है। और वह कहता है, ओह, ज़रूर, जितना समय चाहो ले लो। लेकिन रोम को उस घेरे से बाहर निकलने से पहले तुमसे जवाब चाहिए।

ठीक है, तो अब एंटीओकस को रोमनों द्वारा अपमानित किया गया है, और उसे मिस्र से वापस जाने के लिए सहमत होना पड़ा है। अब, आप सोच रहे होंगे कि रोमन वहाँ क्या कर रहे थे। खैर, सीधे शब्दों में कहें तो, रोमन नहीं चाहते थे कि कोई भी राज्य बहुत मजबूत, बहुत शक्तिशाली हो जाए।

वे मिस्र को रोम के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण संसाधन मानते थे क्योंकि यह उन्हें बहुत सारा अनाज उपलब्ध कराता था जिसकी उन्हें ज़रूरत थी। इसलिए, रोम के लोग नहीं चाहते थे कि सेल्यूसिड्स मिस्र पर कब्ज़ा कर लें। तो वैसे भी, एंटीओकस एपिफेन्स इस पर कैसे प्रतिक्रिया देगा? खैर, वह अपनी दुम को अपने पैरों के बीच फँसा लेता है, और वह धीरे-धीरे घर वापस लौटना शुरू कर देता है।

खैर, जैसा कि अक्सर होता है, ऐसी स्थितियों में, पूरे पूर्व में एक अफवाह तेजी से फैल गई, कि एंटीओकस एपिफेन्स को मिस्र में मार दिया गया था। और इसलिए जेसन, पूर्व महायाजक, ओनियास द्वितीय का भाई, यह अफवाह सुनकर कि एंटीओकस एपिफेन्स मर चुका है, फैसला करता है कि अब मंदिर को फिर से अपने कब्जे में लेने का उसका मौका है। इसलिए, वह अपने लिए अम्मोनियों की एक सेना इकट्ठा करता है, उन्हें काम पर रखता है।

उसे उसी टोबियास परिवार से भी पैसे मिल रहे थे जिसके बारे में हम बार-बार सुनते आ रहे हैं। वह टोबियास द्वारा पैसे जुटाकर एक सेना इकट्ठी करता है और यरूशलेम पर आक्रमण करता है। तो एंटीओकस ने क्या जवाब दिया? उसने सुना कि मेनेलोस, जिस पुजारी को उसने यरूशलेम में महायाजक के रूप में नियुक्त किया था, उस पर मंदिर में हमला किया जा रहा है।

उनका मानना है कि यह उनके और उनके अधिकार पर एक व्यक्तिगत हमला है। और इसलिए, एंटीओकस ने अपने सैनिकों को दूसरी दिशा में मोड़ दिया। नहीं, वह रोमनों को चुनौती देने नहीं जा रहा था, लेकिन लानत है, वह यहूदियों को अपने साथ धक्का-मुक्की करने नहीं देगा।

इसलिए, वह अपनी सेना के साथ यरूशलेम की ओर कूच करता है। खैर, जैसे ही उसकी सेना यरूशलेम के पास पहुंची, जेसन डूबते जहाज से चूहे की तरह भाग गया।

और वह फिर से सामने आया। लेकिन एंटीओकस तुरंत यरूशलेम में मार्शल लॉ लागू कर देता है। इसके अलावा, एंटीओकस का मानना है कि यहाँ समस्या का एक हिस्सा यहूदियों के अजीबोगरीब धर्म में निहित है।

एंटीओकस एपिफेन्स खुद को भगवान मानता था। दरअसल, उसकी उपाधि एपिफेन्स का मतलब है अभिव्यक्ति। वह भगवान की अभिव्यक्ति है।

वास्तव में, उन्होंने इसे इतनी गंभीरता से लिया कि उनके कुछ सिक्कों में, जहाँ आमतौर पर ज़ीउस का चेहरा दिखाई देता था, उन्होंने ज़ीउस के चेहरे के बजाय अपना चेहरा रखा क्योंकि, आप जानते हैं, वह पृथ्वी पर ज़ीउस था। और उन्हें लगा कि यहूदियों द्वारा उनकी पूजा करने से इनकार करने का मतलब है कि वे सेल्यूसिड साम्राज्य के साथ खेल नहीं रहे थे। उनके पास एक पागल धर्म है, जो उन्हें अन्य देशों के साथ काम करने से रोकता है।

इसलिए, उसने फैसला किया कि उसे अब यहूदिया में यहूदी धर्म को खत्म करना होगा। उसने जो कुछ किया, उसमें से एक यह था कि उसने यरूशलेम शहर में एक किला बनवाया, जिसे एकर कहा जाता है। यह इस पूरी अवधि के लिए एक प्रमुख मुद्दा बनने जा रहा है क्योंकि यह एकर यरूशलेम के बीच में एक विशाल किले की तरह था, जिसमें यूनानी सैनिक तैनात थे।

तो, आपको इसकी मौजूदगी मिल गई है। चलो देखते हैं कि क्या मैं इसकी कोई तस्वीर ढूँढ़ सकता हूँ। मुझे लगता है कि यह इस खंड में है। लेकिन आपके पास यह प्रमुख टॉवर है जहाँ सभी यूनानी सैनिक हर समय यहूदियों पर नज़र रखते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे एक पंक्ति से बाहर न निकलें।

यहाँ एकर का मॉडल है। जैसा कि आप देख सकते हैं, यह एक बहुत ही भव्य स्थान था। धार्मिक उत्पीड़न, द्वितीय मैकाबीज़ की पुस्तक यहाँ जो कुछ हुआ उसका बहुत ही भयावह वर्णन करती है।

लेकिन मूल रूप से, विचार यह है कि यहूदियों को यूनानी देवताओं और पृथ्वी पर यूनानी देवताओं के प्रतिनिधि के रूप में एंटीओकस को स्वीकार करना सीखना चाहिए। डैनियल की पुस्तक कहती है कि उजाड़ने वाली घृणित वस्तु यरूशलेम के मंदिर में स्थापित की गई थी। घृणित वस्तु किसी प्रकार की मूर्ति है जो यूनानी देवता के रूप में एंटीओकस का प्रतिनिधित्व करती है, संभवतः ज़ीउस।

इसलिए, यरूशलेम पर यूनानी राज्य पंथ को जबरन थोपा गया। यहूदी कानून और रीति-रिवाजों को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। हमें बताया गया कि यहूदियों को खतना करने की मनाही थी और जो भी माँ अपने बच्चे का खतना करवाती थी, उसे उसके बच्चे के साथ मौत के घाट उतार दिया जाता था।

हमें बताया गया कि जो कोई भी टोरा, यहूदियों के कानून की प्रति अपने पास रखता था, उसे मौत की सज़ा दी जाती थी। हमें बताया गया कि जो कोई भी सब्बाथ का पालन करता था, उसे मौत की सज़ा दी जाती थी। ऐसा लगता था कि यहाँ जो कुछ भी होता था, उसके लिए व्यावहारिक रूप से एक ही सज़ा थी।

पूरे यहूदिया में यूनानी राजदूतों को शहर-शहर भेजा गया, और उन शहरों से यूनानी पंथ के लिए एक वेदी स्थापित करने और ग्रीक देवताओं को, बेशक, एंटीओकस के रूप में बलिदान चढ़ाने के लिए कहा गया। अब, जाहिर है, हर कोई इसके साथ जाने वाला नहीं था। और प्रतिरोध के कुछ प्रमुख स्रोत हैं।

हसीदियन के नाम से जानते हैं, जिसका अर्थ है पवित्र लोग। हसीदियन भगवान के नियमों के प्रति बेहद समर्पित थे और लोगों से अपेक्षित किसी भी गतिविधि में भाग लेने से इनकार कर दिया। और इसलिए, उनमें से कई को शहर छोड़कर जंगल में भागना पड़ा, जहाँ उन्होंने प्रतिरोध के ये छोटे-छोटे समूह बनाए।

प्रतिरोध का दूसरा प्रमुख अंग हैसमोनियन परिवार था, जिसे हम मैकाबीज़ के नाम से जानते हैं। यह थोड़ा ग़लत नाम है, और मैं आपको थोड़ी देर में बताऊंगा कि क्यों।

कहानी यह है कि जब सेल्यूसिड्स के राजदूत मोदीन शहर में आए, जहाँ मथाथियस नाम का एक व्यक्ति अपने बेटों के साथ रहता था, तो अधिकारी ने लोगों से बलि चढ़ाने को कहा। और मथाथियस, जो एक पुजारी था, और यह देखकर कि इस व्यक्ति का नागरिकों के बीच बहुत सम्मान था, उसने आदेश दिया कि मथाथियस को सबसे पहले बलि चढ़ानी चाहिए और एंटीओकस के प्रति अपनी वफादारी दिखानी चाहिए। खैर, मथाथियस ने तलवार हाथ में ले ली, जिसका इस्तेमाल बलि चढ़ाने के लिए किया जाना था, और इसके बजाय, उसने यूनानी अधिकारी को मार डाला।

और फिर उसने अपने बेटों को बुलाया और कहा, मेरे बेटों, तुम सब लोग जो प्रभु के नियमों के प्रति उत्साही हो, आओ हम पहाड़ियों पर इकट्ठा हों। और इसलिए मत्तियास अपने परिवार को मोडेन से बाहर ले गया, और वे भी पहाड़ियों पर चले गए जहाँ वे प्रतिरोध का दूसरा विंग बन गए। तो, यह सब कैसे हुआ? खैर, इस विद्रोह के शुरू होने के कुछ ही समय बाद मत्तियास की मृत्यु हो गई, और उसके बेटे जूडस ने सत्ता संभाली।

अब, जूडस का एक उपनाम है। उसका उपनाम मैकाबीस है, जो जाहिर तौर पर एक हथौड़े को संदर्भित करता है। इस बारे में कई तरह की अटकलें लगाई गई हैं कि उसका हथौड़ा वाला हिस्सा वास्तव में क्या था।

कुछ लोगों के बारे में ऐसी किवंदंतियाँ हैं कि वह हथौड़े से लड़ता था। ऐसा नहीं लगता कि यह सच है, क्योंकि हम जानते हैं कि वह तलवारों का इस्तेमाल करता था। ऐसा कहा जाता है कि वह तलवारों का इस्तेमाल करता था।

कुछ लोगों ने कहा कि शायद उसका सिर हथौड़े जैसा दिखता था। दूसरों ने कहा कि शायद यह उसका पैर था। लेकिन हमें नहीं पता, लेकिन किसी कारण से उसे हथौड़ा चलाने वाला कहा जाता था।

शायद ऐसा इसलिए था, या हथौड़ा आदमी, मुझे लगता है। शायद ऐसा इसलिए था क्योंकि वह अपने दुश्मनों पर जिस तरह से हमला करता था। कौन जानता है? लेकिन किसी भी तरह से, यहीं से हमें मैकाबीस नाम मिला, यहूदा से है।

यहूदा अपने पिता की मृत्यु के बाद विद्रोह का मुख्य नेता था। तो चलिए शुरूआती विद्रोह के बारे में बात करते हैं। यह गुरिल्ला युद्ध की विशेषता थी।

इसलिए, हसीदीम, हसीदियन और हसमोनियन दोनों ने पहाड़ियों पर चढ़कर यहूदिया और यरुशलम के आस-पास के इलाकों में गुफाओं में डेरा डाल दिया। और फिर वे उन सभी शहरों पर हमला करते जो यूनानियों के साथ सहयोग कर रहे थे। वे उन सभी यूनानी सैनिकों पर हमला करते जो यहूदिया से गुज़रते हुए उन्हें मिलते।

इस तरह, उन्होंने शुरूआत में कुछ छोटी-मोटी झड़पें जीतीं और खुद को एक ताकत के रूप में स्थापित करना शुरू कर दिया। अब, सब्त के दिन लड़ने के सवाल पर हसीदीम, हसीदियन और हसमोनियन के बीच थोड़ी दरार आ गई थी। हसीदियन का एक समूह सब्त के दिन एक गुफा में डेरा डाले हुए था, और उन्हें एक यूनानी सेना ने खोज लिया।

यूनानी सेना ने उन्हें आदेश दिया कि वे बाहर आएँ और या तो आत्मसमर्पण करें या फिर लड़ें। उन्होंने कहा, ठीक है, वे आत्मसमर्पण नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें अपने ईश्वर के नियमों के प्रति सच्चे रहना है, लेकिन वे लड़ भी नहीं सकते क्योंकि यह सब्त का दिन है। और इसलिए यूनानियों ने जो किया वह यह था कि उन्होंने उन सभी को गुफा में ज़िंदा जला दिया।

खैर, हसमोनियों ने यह देखकर कहा, हमें यहाँ एक निर्णय लेना है। क्या हम लोगों को हमारे सप्ताह के दिन हम पर हमला करने देंगे और हम चुपचाप बैठे रहेंगे, या हम इसका जवाब देंगे? और उन्होंने एक समझौता किया कि वे उन सभी लोगों से लड़ने के लिए तैयार रहेंगे जो उन पर हमला करेंगे, यहाँ तक कि उनके सप्ताह के दिन भी। हम देख सकते हैं कि वे यहाँ सिद्धांतों से थोड़ा समझौता करना शुरू कर रहे हैं, शायद, लेकिन यह आने वाले कई समझौतों में से केवल पहला है।

किसी भी मामले में, कुछ शुरुआती जीतें थीं जो काफी महत्वपूर्ण थीं। उदाहरण के लिए, अपोलोनियस नामक एक व्यक्ति के नेतृत्व में एक छोटी सेना को जूडस मैकाबियस ने हरा दिया था, और जूडस ने अपोलोनियस की तलवार ली और कहा, आह, अच्छी तलवार, और अपने जीवन के बाकी समय उस तलवार से लड़ता रहा। उसके हथौड़े के लिए इतना ही काफी है, है न? लेकिन एक और जीत हुई।

बेथ-होरोन या सरोन नामक स्थान पर सैनिकों पर विजय प्राप्त हुई, जो वहाँ यूनानी सेना का नेता था। इम्मॉस की लड़ाई में गोरगियास और निकानोर नाम का एक व्यक्ति। इन यूनानी सेनाओं और इन यूनानी सैनिकों पर ये सभी विभिन्न जीतें हसमोनियों की प्रतिष्ठा को दृढ़ योद्धा और सेल्यूसिड साम्राज्य की स्थिरता के लिए एक वास्तविक खतरा बना रही थीं।

इसलिए, इन कई जीतों के बाद, यूनानियों ने फैसला किया कि अब इन यहूदियों को गंभीरता से लेने का समय आ गया है, और उन्होंने सेल्यूसिड्स का रीजेंट बनने के लिए लिसियस नाम के एक व्यक्ति को नियुक्त किया। लिसियस ने फैसला किया कि वह यहूदिया में इस विद्रोह को सर्वोच्च प्राथमिकता देगा। इसलिए, 162 ईसा पूर्व में, जब हसमोनियों ने यरूशलेम को फिर से हासिल करने में कामयाबी हासिल कर ली, 164 तो उन्हें अपनी कुछ असफलताओं का सामना करना पड़ा।

आप जानते हैं, आप इन विवरणों को पढ़ते हैं, और आप सोचते हैं कि क्या यह वास्तव में इतना आसान नहीं हो सकता था। हम जानते हैं कि ये यूनानी सैनिक क्या करने में सक्षम हैं। क्या यह वास्तव में इतना आसान हो सकता था? मुझे लगता है कि सवाल का एक हिस्सा यह है कि यूनानी कई मोर्चों पर विभाजित थे, और वे वास्तव में यहूदी विद्रोह के लिए संसाधन नहीं लगा पाए जो उन्हें लगाना चाहिए था, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उन्होंने इसे शुरू में बहुत गंभीरता से नहीं लिया था।

जैसे-जैसे वे इसे और अधिक गंभीरता से लेने लगे, जीत दोनों दिशाओं में थोड़ी और बढ़ने लगी। लेकिन 164 ईसा पूर्व से पहले नहीं। 164 ईसा पूर्व में, हसमोनियों ने मंदिर पर कब्जा कर लिया, और इस बिंदु पर, हमारे पास मंदिर के पुनर्समर्पण के बारे में यह अद्भुत कहानी है जिसे बाद में दर्ज किया गया है।

कहानी के अनुसार, मंदिर को फिर से समर्पित करने के लिए, उन्हें सबसे पहले, बेशक, उन सभी चीजों को शुद्ध करने की ज़रूरत थी जो यूनानियों द्वारा प्रदूषित की गई थीं, जो सूअरों की बलि चढ़ा रहे थे या जो कुछ भी वे वहाँ चढ़ा रहे थे। इसलिए, उन्हें सब कुछ साफ करना पड़ा, उन्हें

वहाँ मौजूद वेदी को अलग करना पड़ा, और कहा गया कि ईंटों को इसलिए रखा गया था क्योंकि उन्हें एक पैगंबर का इंतज़ार करना था जो उन्हें बताए कि ईंटों के साथ क्या करना है। यह एक दिलचस्प तरह की बात है क्योंकि आप आश्चर्य करते हैं, क्या इसका मतलब यह है कि इस समय भविष्यवाणी जारी थी? जाहिर है, ऐसा था।

खैर, इसलिए उन्होंने ईंटों को जमा कर दिया, उन्होंने एक नई वेदी बनाई, और फिर वह समय आया जब उन्हें मंदिर को समर्पित करना था। और इसके लिए मंदिर के समर्पण के लिए आठ-दिवसीय समारोह की आवश्यकता होगी। खैर, जब उन्होंने अपने तेल की जाँच की, वह विशेष तेल जो लेविटिकल कानूनों के अनुसार बनाया गया था, तो उन्होंने पाया कि उनके पास केवल एक दिन के लिए पर्याप्त तेल था।

तेल को पूरे आठ दिनों तक जलना था, अन्यथा इसे समर्पित नहीं किया जाता था। खैर, उन्होंने जो तेल उनके पास था, उसका इस्तेमाल किया और चमत्कारिक रूप से, तेल पूरे आठ दिनों तक जलता रहा। और इसलिए, यह चमत्कार है जो आज भी हनुक्का के पर्व पर मनाया जाता है, जब यहूदी मंदिर के पुनर्समर्पण को याद करते हैं।

तो, चलिए यहाँ देखते हैं। यह कहानी तल्मूड से ली गई है। तो, पवित्र तेल, इसे बहुत सी अलग-अलग चीज़ों के साथ मिलाया गया था।

उन्होंने और तेल क्यों नहीं बनाया? वैसे, तेल बनाने में भी विशेष प्रक्रियाएँ शामिल थीं, इसलिए वे और तेल नहीं बना सकते थे। उन्हें इसे कुछ खास तरीकों से आशीर्वादित करना था, और वे यहाँ थोड़ी जल्दी में थे। इसलिए, तेल के निर्माण के लिए आवश्यक पूरा समय जल गया।

यह दिलचस्प है कि हनुक्काह के इस पर्व का ज़िक्र जोसेफ़स ने भी किया है। उन्होंने अपनी किताब में इसे रोशनी का त्यौहार कहा है। हनुक्काह का मतलब वास्तव में समर्पण है।

हालाँकि, हनुक्काह के पर्व का उल्लेख मृत सागर स्क्रॉल में कभी नहीं किया गया है। यह यहूदी छुट्टियों की किसी भी सूची में नहीं आता है, और मृत सागर स्क्रॉल में कई त्यौहार हैं। और इसका उल्लेख न्यू टेस्टामेंट में भी नहीं किया गया है।

इस बात की संभावना है कि एक मामले में इसका एक संकेत हो सकता है, जब हमें बताया जाता है कि यीशु एक त्यौहार मनाने के लिए यरूशलेम जा रहे थे, और कुछ लोग सोचते हैं कि यह हनुक्का हो सकता है, जिसे मनाने के लिए वे यरूशलेम जा रहे थे। इसमें समस्या यह है कि हनुक्का को तीर्थयात्रा पर्व नहीं माना जाता था। आपको हनुक्का मनाने के लिए यरूशलेम जाने की ज़रूरत नहीं थी।

शायद आप हनुक्का मनाने के लिए यरूशलम जाना चाहते हों, जैसे आप चौथी जुलाई या कुछ और मनाने के लिए वाशिंगटन, डीसी जाना चाहते हों, लेकिन यह ज़रूरी नहीं था। तो, कौन जानता है? तो, यह विद्रोह, जाहिर है, जारी है। एंटीओकस एपिफेन्स उत्तर में किसके खिलाफ़ लड़ रहा है, अंदाज़ा लगाइए? पार्थियन।

मैंने तुमसे कहा था कि वे नहीं जा रहे हैं। पार्थियन साम्राज्य न केवल यूनानियों बल्कि बाद में रोमनों के लिए भी एक कांटा बना हुआ है। इसलिए, 164 ईसा पूर्व में, एंटीओकस IV के बेटे एंटीओकस V को राजा नामित किया गया।

लेकिन इस समय, लिसियस, वह व्यक्ति जिसे रीजेंट नियुक्त किया गया था, अभी भी देश पर शासन कर रहा है, काफी हद तक। अब, 162 ईसा पूर्व में, एक बड़ी लड़ाई हुई, जो वास्तव में हसमोनियन बलों द्वारा झेली गई पहली बड़ी हार थी। बेत जकर्याह की लड़ाई।

यहूदा हार जाता है और वह यरूशलेम लौट जाता है। लिसियस ने उसका पीछा किया और यरूशलेम की घेराबंदी कर दी, लेकिन राजधानी शहर अन्ताकिया में विद्रोह भड़क उठा क्योंकि आपके पास एक नया राजा है और जब भी आपके पास एक नया राजा आता है, तो आप स्वतः ही विद्रोह कर देते हैं। साथ ही, हमारे पास सिंहासन के लिए कई दावेदारों का मुद्दा भी है।

और इसलिए, लिसियस को अन्ताकिया लौटना पड़ा और विद्रोह से निपटना पड़ा। इसलिए, यह लिसियस के लिए एक मुद्दा बन गया। वह कहता है, क्या मेरे लिए यरूशलेम में इस विद्रोह को आगे बढ़ाना वाकई उचित है? क्या मेरे लिए अपने संसाधनों को इसके लिए समर्पित करना वाकई उचित है, जब उत्तर में पार्थिया के खिलाफ युद्ध चल रहा है, जब यहाँ अन्ताकिया में विद्रोह हो रहे हैं? मैं यहूदियों को अपनी मर्जी से काम करने क्यों नहीं देता? और इसलिए, वह ठीक यही करने का फैसला करता है।

लिसियस यहूदियों पर अत्याचार बंद करने की पेशकश करता है और वे निश्चित रूप से इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन इस बिंदु पर, इस संघर्ष की प्रकृति बदल जाती है क्योंकि हसमोनियों, भले ही वे अब उत्पीड़न से मुक्त हैं, उनका मानना है कि जब तक वे एक स्वतंत्र राष्ट्र नहीं बन जाते, तब तक वे भविष्य में ऐसी घटनाओं के खतरे से पूरी तरह मुक्त नहीं होंगे। और यह इस समय यहूदी समुदाय को विभाजित कर रहा है क्योंकि हर कोई इससे सहमत नहीं है।

यरूशलेम में बहुत से लोग थे, यहूदिया में बहुत से लोग थे, जो यह कहने को तैयार थे, ठीक है, चलो शांति प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं और इसे स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन हसमोनियों ने ऐसा नहीं किया। वे इस लड़ाई को जारी रखना चाहते थे और यहूदी स्वतंत्रता के लिए दबाव डालना चाहते थे।

इस समय कुछ राजनीतिक उलझनें हैं। यहूदियों का भाग्य अब सीरिया की राजनीति से जुड़ता जा रहा है। यहीं पर अब सेल्यूसिड साम्राज्य की राजधानी है।

और मेरा विश्वास करो, यहाँ बहुत सारे राजनीतिक अंतर्संबंध हैं, और मैं आपको ये सभी नाम नहीं बताने जा रहा हूँ क्योंकि आप भ्रमित हो जाएंगे। क्योंकि बहुत से लोगों का नाम एक ही है, आप जानते हैं? बहुत से लोग इस पूरे मामले में शामिल हैं। इसलिए हम इसे न्यूनतम रखने की कोशिश करेंगे, क्योंकि यहाँ क्या हो रहा है यह समझना ज़रूरी है।

तो, सबसे पहले, हमारे पास डेमेट्रियस है। डेमेट्रियस, एंटीओकस एपिफेन्स, एंटीओकस IV का भतीजा है। और उसने सीरिया पर आक्रमण किया। उसने एंटीओकस IV के बेटे एंटीओकस V और लिसियस दोनों को मार डाला।

अब, बेशक, वह राजा है, है न? खैर, हमें यरूशलेम में एक नया महायाजक मिला है, जिसका नाम अलकिमस है। अलकिमस हेलेनाइजिंग पार्टी का हिस्सा है। और वह अनुरोध करता है कि डेमेट्रियस उसे हसमोनियों के खिलाफ लड़ने में मदद करेगा, जो अभी भी यहूदिया की स्वतंत्रता के लिए जोर दे रहे हैं।

बैकाइड्स नामक एक व्यक्ति के नेतृत्व में यरूशलेम में एक सेना भेजता है, जो यूनानियों के बीच एक बहुत ही भयानक सेनापति था।

यहूदा को यरूशलेम से वापस जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। और वह अपना गुरिल्ला युद्ध फिर से शुरू कर देता है। इस समय, सेल्यूसिड सेना यरूशलेम से वापस चली जाती है और विद्रोह और वहाँ की सभी परेशानियों को दबाने के लिए एंटीओक लौट जाती है।

खैर, डेमेट्रियस को निकानोर नामक एक व्यक्ति के नेतृत्व में एक और सेना भेजनी है। और यह एक तरह से हासमोनियन सेना के लिए एक बड़ी, अच्छी बात है, एक बड़ी जीत बन जाती है। क्योंकि एडासा की लड़ाई में, जूडास की सेना ने, अब तक की सबसे बड़ी लड़ाई में, निकानोर और उसके सैनिकों को हरा दिया।

और वास्तव में, मैकाबीज़ की पुस्तकों में कहा गया है कि वे अभी भी इसे निकानोर दिवस के रूप में मनाते थे। ऐसा लगता है कि बाद के समय में यह कभी कैलेंडर में नहीं आया। और आज आप किसी भी यहूदी को निकानोर दिवस मनाते हुए नहीं पाएंगे।

लेकिन जिस समय यह युद्ध जीता गया, इसे हसमोनियों द्वारा एक बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया। खैर, जूडस मैकाबीस को 20,000 की सेना के खिलाफ लड़ना पड़ा, जो कि, आप जानते हैं, उन दिनों में छोटी लगती है। आप जानते हैं, जब आप सोचते हैं कि सिकंदर महान के पास 40,000 की सेना थी जिसे वह पूर्व को जीतने के लिए लाया था।

लेकिन इसे एक छोटी सी सेना माना जाता था। लेकिन हसमोनियों जैसे लोगों से निपटने के लिए 20,000 की संख्या, मुझे लगता है कि यह बहुत ज़्यादा है। जूडस कुछ समय तक अपनी जगह पर डटा रहा, हालाँकि, यहाँ उसकी सेना की संख्या बहुत ज़्यादा थी।

लेकिन 161 ईसा पूर्व में एलीएजर की लड़ाई में यहूदा अंततः यूनानी सेना के खिलाफ हार गया। और जब वह मारा गया, तो उसका भाई जोनाथन, जो अगला व्यक्ति था, तुरंत आया और उसने हसमोनियन विद्रोह का नेतृत्व संभाला। इसलिए, जब हम इस बिंदु से आगे बढ़ते हैं, तो हम इस बारे में बात करने जा रहे हैं कि विद्रोह की प्रकृति कैसे बदलती है।

और खास तौर पर आने वाले समय में हसमोनियों का नेतृत्व। क्योंकि इस बिंदु से, हसमोनियों ने न केवल विद्रोही बनना शुरू कर दिया, बल्कि वे सामान्य रूप से यहूदिया के नेता बनने लगे। तो यह हमारी अगली बार तक प्रतीक्षा करेगा।

यह डॉ. एंथनी टॉमसिनो द्वारा यीशु से पहले यहूदी धर्म पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 7 है, हसमोनियन विद्रोह।